M.A-Sem-II Paper - CC5

प्राकृत-खण्ड काव्य

खण्ड काव्य की परिभाषा साहित्यदर्पण में महाकाव्य के एकदेश का अनुसरण करने रूप कही गयी है। वस्तुतः खण्डकाव्य भी महाकाव्य के समान प्रबन्ध-प्रधान काव्य है। इसमें भी प्रबन्ध के समस्त तत्वों का ग्रहण आवश्यक माना गया है। अलंकृति, वस्तु-व्यापार वर्णन, रस-भाव एवं संवाद तत्व इस काव्यविधा में भी पाये जाते हैं।

खण्डकाव्य में जीवन सम्पूर्णरूप में कवि को प्रभावित नहीं करता है, एक अंश या खण्ड रूप में ही वह प्रभावित होता है। अतः किसी एक मर्म को कवि चुनता है और उसकी अभिव्यक्ति सम्प्रेषण करता है। कवि की सारग्राहिणी प्रतिभा एक छोटे से कथा खण्ड में चरित्र विकास की प्रतिष्ठा करती है। इसमें काल और प्रभाव की एकता अपेक्षित होती है। कथावस्तु का विकास धीरे-धीरे होता जाता है। खण्डकाव्य के नायक को पौराणिक या ऐतिहासिक होना आवश्यक नहीं। इसका चयन लोक जीवन से भी किया जाता है।

संक्षेप में खण्ड काव्य प्रबन्ध-काव्य का वह अंग है, जिसमें मानव जीवन के किसी एक साधारण अथवा मार्मिक पक्ष की अनुभूति का काव्यात्मक अभिव्यञ्जन होता है। प्राकृत में खण्डकाव्य बहुत कम लिखे गये हैं। इन उपलब्ध प्राकृत खण्ड काव्यों में कवियों ने अपने सारग्राहिणी के बलपर जीवन के किसी एक अंश का ही प्रतिपादन किया है।

खण्ड महाकाव्य में लिखे गये - यह सब खण्ड महाकाव्य है-

(I) कंसवहो (II) उषानिरुद्ध

(III) भृङ्गसन्देश।

Scanned with CamScanner

(1) कंसवहो एवं उसके रचयिता के काल निर्धारण पर प्रकाश डालें।

Ans.— यह कंसवहो खण्डकाव्य के नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें 'कंसवध' का आख्यान वर्णित है। यह खण्डकाव्य एक सरस काव्य है। इसमें लोकजीवन, वीरता और प्रेमतत्व का एक साथ समावेश किया गया है। उद्धव श्रीकृष्ण और बलराम को धनुर्यज्ञ के बहाने गोकुल से मथुरा ले जाता है। वहाँ पहुँचने पर श्रीकृष्ण के द्वारा कंस की मृत्यु हो जाती है। कथानक का आधार श्रीमद्भागवत है। शैली पर कालिदास, भारवि और माघ की रचनाओं का प्रभाव प्रचुर परिमाण दिखायी पड़ता है।

लेखक का परिचय एवं काल निर्धारण

कंसवहो खण्डकाव्य के रचयिता – रामपाणिवाद हैं। यह मलावर प्रदेश की नम्बियम जाति के थे। इनका व्यवसाय नाटक प्रदर्शन के समय मुरज या मृदङ्ग बजाना था। यही यथार्थतः पाणिवाद नाम की सार्थकता है। इस प्रकार कवि साहित्य और नृत्यकला की परम्परा से सुपरिचित था।

"रामपाणिवाद का जन्म ई० सन् 1707 के लगभग दक्षिण मलावर के एक ग्राम में हुआ था। बाल्यकाल में उन्होंने अपने पिता से ही शिक्षा प्राप्त की। विद्वान कवि होने के अनन्तर ये उत्तर मलावार के कोलतिर राजा के आश्रम में चले गये।

कौल नरेश के नगर में मेरे सभी दिन उपवास में बीतते थे और रात्रियाँ मच्छरों तथा खटमलों के कारण शिवरात्रि के समान जागरण करते हुए व्यतीत होती थीं। वहाँ से चलकर राजा वीरराघव, कोचीन के एक ताल्लुकेदार सुरियनाडु - चेम्पक केसरी के राजा देवनारायण, वीरमार्तण्ड वर्मा एवं कालिकट तिरुमाल आदि राजाओं के आश्रय में रहे। इस इनकी मृत्यु संभवतः पागल कुत्ते के काटने से हो गई - सन 1975 के लगभग हुई थी।

प्राकृत भाषा का कवि महान पण्डित है। इन्होंने वररुचि के प्राकृत प्रकाश पर प्राकृतवृत्ति नामक टीका लिखी है। तथा दो खण्ड काव्य (i) कंसवध, (ii) एवं उषानिरुद्ध